समझ बनाने की रणनीतियों का शिक्षण भाग 2: बोलते हुए सोचना

Early Literacy Initiative

Tata Institute of Social Sciences, Hyderabad

Practitioner Brief (15)
2019

Supported by

TATA TRUSTS

This Practitioner Brief is part of a series brought out by the Early Literacy Initiative anchored by the Azim Premji School of Education at the Tata Institute of Social Sciences, Hyderabad.

समझ बनाने की रणनीतियों का शिक्षण भाग 2: बोलते हुए सोचना

ई एल आई (ELI) ने समझ बनाने की रणनीतियों पर दो हैंडआउट तैयार किया है । भाग एक समझ बनाने की रणनीतियों के शिक्षण का परिचय और संक्षिप्त विवरण प्रदान करता है। यह हैंडआउट इस श्रृंखला का दूसरा भाग है। विशेष रूप से, बच्चों को समझ बनाने की रणनीति के शिक्षण के महत्व को संक्षेप में दोहराने के बाद यह बताता है कि बोलते हुए सोचने का संचालन कैसे करना है।

अपने स्कूल के दिनों को याद करें : क्या कभी आपके शिक्षकों ने आपको दिखाया कि जो आपने पढ़ा है उसे कैसे समझना है? ज़्यादातर लोगों के लिए, जवाब "नहीं" होगा।

किसी पाठ को पढ़ने के बाद, आपके शिक्षकों ने आपसे उस पढ़े गए पाठ का मतलब पुछा होगा और आपको बताया होगा कि आपका उत्तर सही था या ग़लत। उन्होंने उन छात्रों को जो पढ़े गए पाठ को नहीं समझ पाए , "कमज़ोर पाठक" बतलाते हुए उनसे "फिर से पढ़ने" या "अधिक ध्यान देने" के लिए कहा होगा। या हो सकता है कि उन्होंने आपको सीधे –सीधे पाठ का अर्थ समझा दिया होगा, बिना यह बताये की वो इस अर्थ तक कैसे पहुँच पाए।

जब आप स्कूल में थे तब से अब तक चीज़ें बहुत ज़्यादा नहीं बदली हैं - आज भी ज़्यादातर भारतीय कक्षाओं में इसी तरह की प्रथाएँ प्रचलित हैं ((Menon et al., 2017, Sah, 2009, as cited in Sinha, 2018))। हालाँकि, इन पद्धतियों का उपयोग करते समय शिक्षकों की मंशा तो अच्छी रहती है, फिर भी इससे छात्रों में समझने के कौशल का विकास ठीक से विकसित नहीं हो पाता है। ज़्यादा से ज़्यादा, छात्र चर्चा किए गए उस विशिष्ट पाठ को ही समझ पाते हैं। लेकिन पाठ को 'कैसे समझना है' ये सिखाये बिना, इस तरह के अभ्यास छात्रों को *नए* पाठ को समझने में मदद नहीं करते। बल्कि इससे, छात्र **निष्क्रिय** हो सकते हैं और समझने के लिए पूरी तरह से शिक्षक पर निर्भर होने लगते हैं। (सिन्हा, 2018)।

[1] Access **Part I** of this series, *Teaching Comprehension Strategies, Part I: Introduction and Overview* at http://eli.tiss.edu/handouts-publications/.Illustration at the top by James Yang in American Educator's Spring 2012 issue. Retrieved from: https://www.aft.org/sites/default/files/periodicals/Rosenshine.pdf

इस "कैसे करना है " में क्या शामिल है ? संयुक्त राज्य अमेरिका में किए गए शोध में यह बताया गया है कि जो लोग पाठ को अच्छी तरह से समझते हैं ("कुशल पाठक") वे पढ़ते समय अर्थ का निर्माण करने के लिए कई *रणनीतियों* का उपयोग करते हैं (प्रेसले, 2001)। उदाहरण के लिए, वे किसी पाठ को पढ़ने के लिए लक्ष्य निर्धारित करते हैं, पाठ को पढ़ने से पहले उसका पूर्वावलोकन करते हैं, आगे आने वाले पाठ के बारे में अनुमान लगाते है, पाठ में मिलने वाली नयी जानकारियों को वे अपने पूर्वज्ञान से भी जोड़कर देखते हैं आदि। वहीँ दूसरी ओर, नए या कमज़ोर पाठक या तो इन रणनीतियों का उपयोग नहीं करते हैं, या वे उन्हें लगातार उपयोग नहीं करते हैं। इसलिए, वे पाठ को अच्छी तरह से समझने में असमर्थ रहते हैं।

संयोग से, शोध ने यह भी दिखाया है कि समझ बनाने की रणनीतियों को सिखाया जा सकता है। इस तरह के निर्देश में, शिक्षक छात्रों के लिए पाठ की व्याख्या बिलकुल नहीं करते बल्कि वे उन्हें वह तरीके दिखाते हैं जिससे वे छात्र स्वयं ही पाठ के प्रति अपनी समझ बना सकें। अंततोगत्वा, यह पाठों की व्याख्या करने की तुलना में कहीं अधिक प्रभावी है। शोध ने साबित किया है कि सभी छात्रों को समझ की रणनीति सिखाई जानी चाहिए। यहाँ तक कि वे बच्चे भी समझ के साथ पढ़ना सीख सकते हैं जो स्वाभाविक तौर से अर्थ निर्माण में कुशल नहीं हैं, बशर्ते हम उन्हें सिखाएं ।

जैसा कि इस श्रृंखला के भाग। में बताया गया है, हम इस बात की मज़बूती से अनुशंसा करते हैं कि आप समझ बनाने के शिक्षण के लिए *ज़िम्मेदारी का क्रमिक हस्तांतरण मॉडल* (GRR Model) का उपयोग करें (चित्र 1 देखें)। समझ बनाने की किसी ख़ास रणनीति के उपयोग को समझाने के लिए उस रणनीति की स्पष्ठ व्याख्या और मॉडलिंग से शुरुआत करें। फिर अलग-अलग तरीकों ("सहयोगात्मक" और "निर्देशित") से उस रणनीति का उपयोग करने के लिए समय-समय पर अपने छात्रों का मार्गदर्शन करते रहें।

चित्र 1. समझ के शिक्षण के लिए **ज़िम्मेदारी का क्रमिक हस्तांतरण** मॉडल
(www.literacycompanion.weebly.com से अनुकूलित)

इसके बाद ही आप उनसे अपेक्षा कर सकते हैं कि वे सीखी गई रणनीतियों का स्वतः ही स्वतंत्र रूप से उपयोग करेंगे। यह मॉडल छात्रों की सहायता करने का एक तरीका है जहां पर शिक्षक रणनीति के प्रयोग की अपनी ज़िम्मेदारी को धीरे-धीरे छात्रों पर डालते जाते हैं। इस सारपत्र में, हम GRR मॉडल के पहले चरण को विस्तार से बताएँगे हम आपको समझ की रणनीति के प्रदर्शन (मॉडलिंग) की प्रक्रिया को विस्तार बताएंगे ताकि आपके द्वारा अपनाई गई अर्थ निर्माण की प्रक्रिया छात्रों को स्पष्ट हो जाये।

आगे बढ़ने से पहले एक महत्वपूर्ण बिंदु -कई शिक्षकों का मानना है कि बच्चों को अर्थ निर्माण पर ध्यान देने के लिए तभी कहना चाहिए जब वे अक्षर और शब्द पढ़ना सीख चुके हों । बच्चे स्वभाव से ही अर्थ- निर्माता होते हैं और वह पहले दिन से ही आपके द्वारा पढाई गई कहानियों और किताबों पर लगातार समझ बनाने की कोशिश कर रहे होते हैं। इसलिए शुरुआती कक्षा से ही आपको छात्रों के स्तर के अनुकूल उनकी समझ बनाने पर ध्यान केंद्रित करना महत्वपूर्ण है।

रणनीतियों को प्रदर्शित करने के लिए बोलते हुए सोचने (Think-aloud) का उपयोग करना

चित्र 1 में, समझ की शिक्षण निर्देश की शुरुआत शिक्षक द्वारा छात्रों के समक्ष रणनीति का प्रदर्शन और उसकी व्याख्या करने से होती है; लेकिन समझ या अर्थ-निर्माण हमारे दिमाग के अंदर होता है। एक शिक्षक अपने छात्रों को यह कैसे दिखा सकता है कि वह अपने दिमाग में किस तरह से सोच रहे हैं ? हम आपको बोलते हुए सोचने (Think aloud) की एक विधि बता रहे हैं , जिसके द्वारा शिक्षक अपनी सोच को ज़ोर से बोलकर छात्रों को दिखने की कोशिश करते हैं ।आप अपने छात्रों से कहें कि आप उन्हें यह सिखा रहे हैं कि अच्छे पाठक पढ़ते समय निष्कर्ष (inference) पर कैसे पहुचते हैं। किताब को पढ़ते समय उपयुक्त बिंदुओं पर रुकें और अपनी सोच बच्चों से साझा करें कि आप पाठ या चित्रों में छुपे संकेतों की पहचान कैसे कर रहे हैं और उन्हें जोड़ते हुए उन विचारों को कैसे समझने का प्रयास कर रहे हैं जिनका लेखक ने सीधे-सीधे उल्लेख नहीं किया है ।

आप छात्रों को दिखाएँ की आप कैसे सोचते हैं)(चित्र 2 देखें)। यहीबोलते हुए सोचने का निचोड़ है। इस तरह के प्रदर्शन (मॉडलिंग) से बच्चों को आपके अदृश्य सोच की प्रक्रिया को देखने और अपनाने में मदद मिलती है। इससे केवल उन्हें वर्तमान पाठ को बेहतर समझने में ही मदद नहीं मिलती है ,बल्कि इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह उन्हें इस रणनीति का उपयोग करके अन्य पाठों को समझने में भी सक्षम बनाता है। आइए देखें कि आप अब इसे आगे कैसे कर सकते हैं !

'बोलते हुए सोचना' (Think-aloud) की योजना बनाना

सबसे पहले आप एक विशिष्ट समझ की रणनीति को चुनें जिस पर आप ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं जैसे -: निष्कर्ष निकलना, संक्षेप करना या अनुमान लगाना ।

[2] Refer to **Part I** of this series, mentioned earlier, for descriptions and examples of key comprehension strategies.

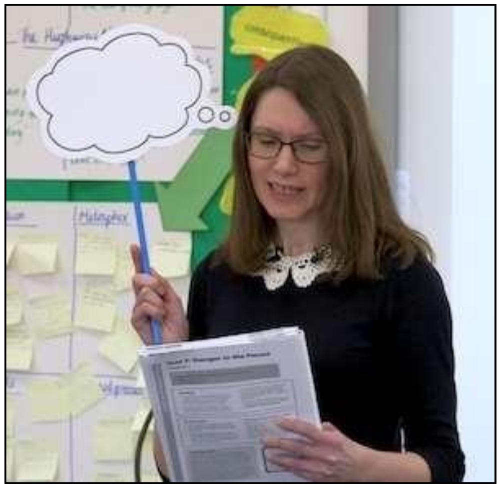

चित्र 2. ***बोलते हुए सोचना*** सत्र प्रगति पर। (Source: https://www.oxfordowl.co.uk)

दूसरा, ध्यान से एक ऐसे पाठ का चुनाव करें जो आपको चयनित रणनीति पर बोलते हुए/बोलकर सोचने के लिए कई मौके देता है। उन जगहों का चुनाव करें, जहां आप इसे प्रदर्शित करके दिखाएंगे। ज़ाहिर है कि अच्छे पाठक पढ़ते समय एक बार में केवल एक रणनीति का उपयोग नहीं करते हैं ,वे अनुमान लगा सकते हैं, सार निकाल सकते हैं, निष्कर्ष निकाल सकते हैं और पढ़ते समय खुद के जीवन के अनुभव के साथ जोड़ सकते हैं। लेकिन, छोटे बच्चों को यह दिखाना मुश्किल है कि एक बार में ही सब कुछ एक साथ कैसे किया जाए । इसलिए सीखने के शुरुआती चरणों में एक बार में एक रणनीति (बोलते हुए सोचने की) को प्रदर्शित करने पर ध्यान केंद्रित करना बेहतर हो सकता है। यह छोटे बच्चों के लिए प्रक्रिया को धीमा करता है और उन्हें एक समय में एक रणनीति के साथ जुड़ने, समझने और अभ्यास करने में मदद करता है। जैसे-जैसे वे रणनीतियों के साथ अधिक सहज और परिचित होते है, उन्हें प्रोत्साहित करें और एक साथ कई रणनीतियों का उपयोग करने में उनकी सहायता करें। तीसरा, अपने छात्रों को समझ बनाने की रणनीति सिखाने के लिए इन चरणों का पालन करें विल्हेम), 2001)।

1. बताएं की रणनीति में क्या शामिल है।
2. समझाएं की रणनीति क्यों महत्वपूर्ण है।
3. छात्रों को बताएं कि पढ़ने के दौरान रणनीति का उपयोग कब करना है ,अर्थात पाठ की कौन सी विशेषता पाठक को यह संकेत दे सकती है, कि किस रणनीति का उपयोग किया जाए।
4. जब छात्र अवलोकन कर रहे होते है तब वास्तविक पाठ का उपयोग करते हुए मॉडल करके दिखाएं कि उस रणनीति को कैसे उपयोग करना है।

चौथा, जो पाठ आप छात्रों के सामने पढ़ने जा रहे है उसकी मूल प्रतियां आपके पास होगी। कोशिश करें, कि अपने छात्रों को भी उसकी फ़ोटो कॉपी दें ताकि छात्र भी आपके साथ पढ़ सकें। लेकिन; अगर आपके पास किताब की अनेक प्रतियां नहीं हैं ,या छात्र अभी तक धाराप्रवाह नहीं पढ़ सकते तो छात्र भ्रमित हो सकते हैं कि आप कब पढ़ रहे है और कब आप बोलते हुए सोच रहे है। इस स्थिति में, एक प्रॉप (सामग्री) या हावभाव का

उपयोग करके अंतर को स्पष्ट रूप से दिखाया जा सकता है (बियर, 2003)। उदाहरण के लिए, हर बार जब आप बोलते हुए सोचते हैं तो एक '*सोचने का हैट*' पहन लें, *ताकि* छात्रों को पता चलें कि वे आपको सोचते हुए सुन रहे हैं; या जब भी आप बोलते हुए सोचते हैं आप केवल छत को देखें , ताकि वे जान जाएं कि आप उस समय पाठ से नहीं पढ़ रहे हैं।

'*बोलते हुए सोचना*' का उदाहरण

इस भाग में, हम आपको पुस्तक कैच दैट कैट![3] (चित्र 3 देखें) का उपयोग करते हुए *बोलते हुए सोचना* प्रदर्शित कर रहे हैं। यहां, उद्देश्य है कक्षा 3 के छात्रों को यह सिखाना, कि वे जो भी पढ़ते हैं उसको समझने के लिए निष्कर्ष कैसे निकालें और उसका उपयोग करें ।

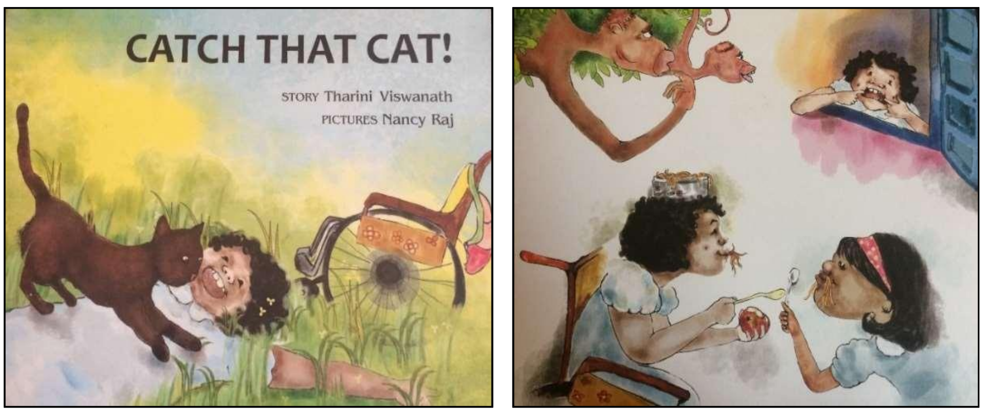

चित्र 3. कैच दैट कैट! पुस्तक के कवर पेज का एक चित्र

निष्कर्ष निकालना क्या है? सरल शब्दों में, पाठ में जो नहीं लिखा है उसे समझना । इसके लिए, अच्छे पाठक किसी निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए दुनिया के बारे में अपने पूर्व ज्ञान को पाठ में जो कुछ हो रहा है उससे जोड़ते हैं । उदाहरण के लिए, किसी पाठ में यह लिखा हो सकता है, "बिल्लियों ने चूहों को एक पार्टी में बुलाया"। अच्छे पाठकों को पता चल जाएगा, कि बिल्लियाँ और चूहे वास्तविक दुनिया में दोस्त नहीं हैं - उन्हें तुरंत इस निमंत्रण पर संदेह होगा। हमें लगता है, कि निष्कर्ष निकालने ली प्रक्रिया को छोटे बच्चों को सरलतम तरीके से बताया जा सकता है।

[3] Tulika, 2013. Written by Tharini Viswanath and illustrated by Nancy Raj.

अगले कुछ पन्नों में देखें, कि कैसे हम पहले रणनीति का परिचय देते हैं और फिर कैच दैट कैट! किताब को समझने के लिए इसे लागू करते हैं, चूँकि हम चित्र पुस्तक का उपयोग कर रहे हैं, हम छात्रों को पाठ तथा चित्रों में 'संकेतों' के प्रति सजग करते हैं, ताकि वे कहानी के पात्रों, कार्यों और घटनाओं को और अच्छे ढंग से समझ सकें ।

परिचय सत्र	
आज, मैं आपके लिए एक कहानी पढ़ने जा रही हूँ। इस कहानी का नाम ***कैच दैट कैट*** है! पढ़ते हुए मैं कुछ स्थानों पर रुकुंगी और आपको बताउंगी, कि मैं क्या सोच रही हूं। इस तरह, आप देख सकते हैं, कि मैं किस प्रकार कहानी को समझने की कोशिश कर रही हूँ। ध्यान से सुनना कि कहानी को बेहतर ढंग से समझने के लिए मैं किस तरह शब्द और चित्र जो कहते हैं को जो मैं पहले से ही जानती हूँ से जोड़ती हूँ । ठीक है? इसे " अनुमान लगाना " भी बोला जा सकता है।	शिक्षिका बताती हैं कि सत्र में क्या किया जाएगा।
कभी-कभी, लेखक हमें एक कहानी में सभी विवरण नहीं देते हैं। लेकिन हम उन "संकेतों " पर ध्यान देकर, जो वे हमारे लिए छोड़ते हैं, इनमें से कुछ का अंदाज़ालगा सकते हैं। इस अनुमान लगाना कहते हैं जिसमें कहानी को बेहतर ढंग से समझने के लिए अनकही बातों को भी समझने की कोशिश करते हैं।	शिक्षिका चाइल्ड फ्रेंडली तरीके से रणनीति का परिचय देती है।
जब आप बिल्कुल समझ ही नहीं पाते हैं कि कहानी में चल क्या रहा है, यानी जब आप उलझन महसूस करते हैं, तो तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष निकालना या अनुमान लगाना मददगार होता है। शायद आपको आश्चर्य हो रहा हो कि यह पात्र क्या महसूस कर रहा है या सोच रहा है? वह जिस तरह स व्यवहार कर रही है वह क्यों कर रही है? वह किस तरह का व्यक्ति है? सभी पात्र एक दूसरे से किस तरह संबंधित हैं? जब भी आप सोच में पड़ते हो कि कहानी में वास्तव में हो क्या रहा है तो रुकें; फिर से पढ़ना शुरू करें; और दिए गए तथ्यों के आधार पर अनुमान लगाने की कोशिश करें। आप देखेंगे कि मैं आज कैसे करती हूं। ठीक है? शुरू करें?	शिक्षिका बताती हैं, कि रणनीति का उपयोग क्यों और कब करना है।

किताब से चयनित पाठ्य सामग्री	शिक्षक/शिक्षिका द्वारा बोलते हुए सोचना	पाठकों के लिए टिप्पणी
डिप डिप स्कूल की सबसे शरारती बच्ची थी। वह गलियारों में से गुनगुनाती हुई निकलती थी; वो खिडकियों से बंदरो के साथ खेलती थ। ब्रेक में खाने पर हुए अधिकांश झगड़ों की शुरुआत वही करती थी।	हम्म ...शब्दों से लग रहा है कि डिप डिप एक शरारती और मौज-मस्ती करने वाली लड़की है। रुको! रुको! लेकिन इन चित्रों में तो वह व्हीलचेयर पर है(चित्र देखें 3)| कवर प्रज पर भी व्हील चेयर का चित्र था । इसीलिए, भले ही वह चल नहीं सकती, पर फिर भी वह स्कूल जाती है और खूब मस्ती करती है। मुझे पता है, कई कहानियों और फिल्मों में, डिप डिप जैसे बच्चे बहुत उदास रहते हैं। और वे स्कूल भी नहीं जाते हैं; लेकिन डिप डिप हमारे जैसी ही लगती है। उसे नूडल्स के साथ खेलते हुए देखो! मुझे वह पहले से ही पसन्द है।	लेखक यह नहीं कहती ,कि डिप डिप शारीरिक रूप से दिव्यांग यह चित्रों के आधार पर पाठको का निष्कर्ष है। उसके चरित्र और व्यक्तित्व (और पूरी कहानी!) की सराहना करने के लिए इन विवरणों को देखना महत्वपूर्ण है।
"चिंता मत करो, मीमो।" डिप डिप ने कहा। "आप स्कूल जाओ" मैं कापी [बिल्ली] को ढूंढ लुंगी।	लेखक ने कहा तो था कि डिप डिप सबकी मदद करती है , लेकिन एक दोस्त की बिल्ली के लिए उस दिन के स्कुल को छोड़ना ?वाह, मैं तो ऐसा केवल मेरे सबसे अच्छे दोस्त के लिए करूँगी। मुझे लगता है कि लेखक हमे यहाँ यह संकेत दे रहे हैं कि मीमो और डिप डिप बहुत क़रीबी दोस्त हैं। लगता है डिप डिप आत्मविश्वास से भरी लड़की है, क्योंकि उसने कहा कि वह स्वयं ही बिल्ली की तलाश कर लेगी ! मुझे आश्चर्य है, कि वह इसे कैसे करेंगी!	यह पात्रों के बीच के संबंध के बारे में निष्कर्ष है, यहाँ शिक्षिका निष्कर्ष निकालने के लिए पाठ से स्वयं का सम्बन्ध बनाती है। शिक्षिका कहानी में आये हुए कई संकेतो की ओर ध्यान आकर्षित करती हैं जो कि कहानी में डिप डिप के व्यक्तित्व और चरित्र को दर्शाते है।
उसने]डिप डिप का भाई उसे वहां [छोड़ दिया उसके स्कूल बस ,का इन्तजार करने के लिए, और अपने स्कूल के लिए रवाना हो गया। जैसे ही उसका भाई वहां से गया डीप ,... डीप भागी...	वह अपने भाई के जाने तक इंतजार करती रही ,इससे पता चलता है कि वह नहीं चाहती थी कि उसके भाई को पता चले, कि वह स्कूल से गायब होने वाली है। शायद वह सोचती है कि वह उसे, उस दिन के लिए स्कूल नहीं छोड़ने देगा या उसे अपने दम पर बिल्ली की तलाश करने की अनुमति भी नहीं देगा। यह भी एक संकेत है, कि न तो उसके भाई और न ही अन्य परिवार के सदस्यों को पता है कि वह कहाँ है !कितनी बहादुर है वह जो	यह उस कथानक / स्थिति के बारे में एक निष्कर्ष है, जो कि कहानी को रोमांचक बनाता है ।

	अपने आप से ऐसे जोख़िमभरे कार्य के लिए निकल पड़ती है!	
वह पहाड़ी के नीचे बिल्ली के पीछे लपकी। उसने सोचा कि भगवान् का शुक्र है मेरे पास पहिये है जो कि दौड़ने से भी तेज थे। वह हमेशा दौड़ में अपने दोस्तों को काफी आसानी से हरा सकती थी !	डिप डिप की अपनी परिस्थिति पर सकारात्मक सोच मुझे बहुत पसंद आई! वह इस बात से ख़ुश है कि व्हीलचेयर की वजह से वह दूसरों से ज़्यादा तेज़ भाग सकती है।	यहां, शिक्षक ने चरित्र के बारे में अनुमान लगाया ।
…... उसने अपना लंच बॉक्स खोला और देखा… "फिश करी! यह लाएगा कापी(बिल्ली) को नीचे… "	फिश करी के लिए कापी को नीचे क्यों आना चाहिए? ओह, मैं समझ गया यह क्योंकि सामान्य रूप से बिल्लियों को ! मछली पसंद है और ,डिप डिप सोचती है कि कापी को (बिल्ली) भी पसन्द हो सकती है। बिल्ली को पेड़ से नीचे लाने का बहुत ही शानदार तरीका।	कहानी में ऐसा उल्लेख नहीं है ,कि कापी को मछली पसंद है। डिप डिप के तर्क को समझने के लिए पाठक को बिल्लियों के बारे में अपने ज्ञान को इस्तेमाल करने की ज़रुरत है।

“ठीक है!" डिप डिप ने कहा। "मैं आ रही हूँ। हिलना मत! अपनी त्योंरी चढ़ाकर, जीभ बाहर निकालते हुए डिप डिप अपनी व्हील चेयर के पहियों को पेड़ के पास लाई...	इससे पहले कहानी में, लेखक का उल्लेख है, कि डिप डिप जब भी बहुत गहराई से सोचती है, तो उसकी जीभ बाहर आ जाती है । निश्चय ही वह यहाँ भी कापी(बिल्ली) के पास पहुँचने के लिए पेड़ पर चढ़ने के सबसे अच्छे रास्ते के बारे में सोच रही होगी।	यह निष्कर्ष निकालने के लिए कहानी में आई पिछली जानकारी को वर्तमान परिदृश्य के साथ जोड़ा गया है।
तभी डिप डिप को नीचे आवाजें सुनाई देती हैं।वहाँ है वह“ , उस पेड़ पर !”... उसके पिता उसे पेड़ से नीचे लेकर आए। और सबने उसको डांटा और मुस्कुरा कर गले लगाया।	इससे पहले, मुझे लगा था कि उसके परिवार में कोई नहीं जानता था वह कहाँ थी, याद है? वे ज़रुर चिंतित हो गए होंगे और जब वह वापस नहीं लौटी तो उसकी तलाश शुरू हुई होगी ।यही कारण है, कि डिप डिप का परिवार उसे डांटता है हालाँकि, वे उसे सुरक्षित देखकर खुश होंते हैं। मैं छोटी बच्ची थी, और फूल बाज़ार में खो गयी थी, तो मेरे माता पिता ने- भी ऐसा ही किया था।	यहां शिक्षिका पाठ के पूर्व में निकले निष्कर्ष और पाठ से स्व सम्बन्ध- द्वारा परिवार की प्रतिक्रिया को समझने की कोशिश करती है।

अच्छा, क्या आपने देखा, कि कहानी को समझने के लिए मैं कैसे बीच-बीच में रुकी और निष्कर्ष निकाला। उन चीज़ों को समझने के लिए जिसे लेखक ने सीधे नहीं बताया मैंने पुस्तक में दिए गए संकेतों, जैसे पाठ के शब्द, वाक्य और चित्र का इस्तेमाल किया और जो मैं पहले से जानती थी उससे जोड़ा। जैसे डिप डिप

शिक्षिका ने जो कुछ भी किया है उसका संक्षेप में वर्णन करती है, छात्रों से टिप्पणियों को आमंत्रित करती है और उन्हें रणनीति लागू करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

***'बोलते हुए हुए सोचना'* के बाद के अभ्यास**

क्या आपको GRR मॉडल याद है? *'बोलते हुए सोचना'* समझ बनाने की रणनीति का पहला महत्वपूर्ण कदम है। मगर, ये अकेले काम नहीं करेगा। अपने छात्रों को सहयोगात्मक और निर्देशित अभ्यास करने का मौका दें जहाँ वे इस रणनीति का इस्तेमाल कर सकें। इसके कुछ उदाहरणों में शामिल है :

- जब आप किसी पुस्तक को साथ में पढ़ते हैं रणनीति का साथ में प्रयोग करने के लिए छात्रों को आमंत्रित करें।
- बड़े बच्चों को, जो खुद से पढ़-लिख सकते हैं, प्रश्न, निष्कर्ष और अनुमान को उस पुस्तक/पाठ में ही 'पोस्ट-इट' का उपयोग करते हुए छोड़ने के लिए या नोटबुक में दर्ज करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- समझ बनाने की रणनीति के उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए विशिष्ट फॉर्मेट /ओर्गनइज़र का प्रयोग करें। इसके लिए-चित्र 4 देखें। निष्कर्ष निकालने के लिए ***ये कहता है - मैं कहता हूँ*** चार्ट। (Beers 2003)

छात्रों को वही करने की अनुमति दें, जिन्हें वे खुद से करने में सक्षम हो। हस्तक्षेप और सहायता केवल ज़रूरत पड़ने पर करें। जब भी लगे की छात्रों को किसि रणनीति के लिए अधिक सहयोग की ज़रुरत है या फिर पाठ का स्वरुप और स्तर बदलता है , तब आप मॉडलिंग जारी रखें । अंततः छात्रों को , अपने पठन की प्रक्रिया में आगे बढ़ते हुए को स्वतंत्रतापूर्वक रणनीतियों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें ।

प्रश्न	ये कहता हैं	मैं कहता हूँ	इसलिए
चरण 1.... प्रश्न लिखे (बनाए हुए या दिए हुए)	चरण 2.... पाठ में से उस जानकारी को ढूंढे जो प्रश्नों के उत्तर देने में मदद करेंगे।	चरण 3.... सोचें कि आप उस जानकारी के बारे में क्या जानते हैं ।	चरण 4.... निष्कर्ष (उत्तर) प्राप्त करने के लिए पाठ जो कह रहा है और जो आप जानते हैं को मिलाये ।
उदाहरण: गोल्डीलॉक्स ने भालू के बच्चे की कुर्सी क्यों तोड़ी?	यह कहती है कि वह भालू के बच्चे की कुर्सी पर बैठती है लेकिन वह बच्ची नहीं है बल्कि एक जवान लड़की है।	बच्चों की कुर्सी बड़ी नहीं होती हैं । वे बच्चों के लिए है, मगर वह उनसे बड़ी है इसलिए उसका वज़न अधिक है।	तो वह कुर्सी के लिए बहुत भारी है और यह टूट जाती है।

चित्र 4 . ये कहता हैं - मैं कहता हूँ चार्ट का एक उदाहरण के साथ (beers 2003, pp 166-167)

रणनीतियों को सीखने में काफ़ी समय लगता है। इसलिए यह महत्वपूर्ण है की आप जितनी जल्दी हो सके इन रणनीतियों को सिखाना शुरू कर दें तथा प्राथमिक कक्षाओं से ही छात्रों को नयी रणनीतियां सीखने का , उनका उपयोग करने का और पुरानी सीखी रणनीतियों को और बेहतर करने के लिए अनगिनत अवसर प्रदान करें ।

Adapted from ELI Handout 15 (2019): "Teaching comprehension Strategy Part II : Conducting A Think-Aloud"

References

Beers, K. (2003). *When kids can't read, what teachers can do: A guide for teachers, 6-12*. Portsmouth, NH: Heinemann.

Menon, S., Krishnamurthy, R., Sajitha, S., Apte, N., Basargekar, A., Subramaniam, S., Nalkamani, M., & Modugala, M. (2017). *Literacy Research in Indian Languages (LiRIL): Report of a three-year longitudinal study on early reading and writing in Marathi and Kannada.* Bangalore: Azim Premji University and New Delhi: Tata Trusts.

Pressley, M. (2001). Comprehension instruction: What makes sense now, what might make sense soon. *Reading Online*, *5*(2), pp. 1-14.

Sah, S. (2009). *Reading Hindi literature in elementary school context*. Unpublished M.Phil Dissertation, University of Delhi, Delhi.

Sinha, S. (2018). *Reading comprehension instruction: Developing engaged readers* [Blog Piece]. Retrieved from http://eli.tiss.edu/reading-comprehension-instruction-developing-engaged-readers/

Wilhelm, J.D. (2001). *Improving comprehension with think-aloud strategies*. New York, NY: Scholastic Professional Books.

Author: Akhila Pydah
Conceptual Support and Editing: Shailaja Menon
Copy-editing: Simrita Takhtar
Layout & Design: Harshita V. Das

© 2019 by Early Literacy Initiative, Tata Institute of Social Sciences, Hyderabad.This work is licensed under a Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License: https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/